Sringeri Vidya Bharati Foundation, Canada

ॐ ॥ श्री हनुमान चालीसा ॥ ॐ

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि। बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन कुमार। बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेश विकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन विराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरी नंदन। तेज प्रताप महा जगबंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचंद्र जी के काज संवारे ॥
लाय संजीवन लखन जियाए। श्रीरघुबीर हरषि उर लाए ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बडाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिक्पाल जहां ते। कवि कोविद कहि सके कहां ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥
तुम्हारो मंत्र विभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्त्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहिं। जलधि लांघि गए अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिन पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक ते कांपै ॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन-क्रम-वचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम राजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस वर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम-जनम के दुख बिसरावै ॥
अंतकाल रघुबरपुर जाई। जहां जन्म हरिः भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पिरा। जो सुमिरै हनुमत बलवीरा ॥
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥
जो शत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महासुख होई ॥
जो यह पढै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा ॥

दोहा - पवन तनय संकट हरण मंगल मूरति रूप। रामलखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँडि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥१॥ को...
बालि की त्रास कपीस बसै गिरी जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो ॥२॥को...
अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया-सुधि प्रान उबारो ॥३॥को...
रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो ॥४॥को...
बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तब लक्षिमन के तुम प्रान उबारो ॥५॥को...
रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ॥६॥को...
बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ॥७॥को...
काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ॥८॥को...
दोहा - लाल देह लाली लसे अरु धरि लाल लँगूर।
बज्र देह दानव दलन जय जय जय कपि सूर ॥
॥ ईति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

पी· एस· नायडू एवं परिवार द्वारा - हार्दिक शुभकामनाओं सहित्। हरिः ओ३म् तत्सत्।

84 Brydon Drive, Etobicoke, Ontario M9W 4N6 / 905-320-5127

Computer Graphic : P. S. Naidu / D. G. Art. Mumbai (Bombay), A.S.T.I., F.R.S.A., Post N.D.D. England®